आनन्दवल्ली कुरु मुदम्

रागम्: नीलाम्बरि ताळम्: आदि (चेम्पट)

(*श्री स्वाति तिरुनाळ् विरचित*)

पल्लवि

आनन्दवल्ली कुरु मुदमविरतम्

अनुपल्लवि

दीनजनसन्ताप तिमिराम्रृत किरणायित सुहसे
धृतशुकपोतविलासिनि जय परमानदवल्लि

चरणम्

जम्भविमतमुखसेवितपदयुगळे गिरिराजसुते घन

सारलसित विधुखण्डसदृशनिटिले

शम्भुवदनसरसीरुह मधुपे
सारसाक्षि हृदि विहर दिवानिशम् ॥ १ ॥

केशपाशजित सजलजलदनिकरे पदप ङ्कजसेवक-

खेदजालशमनैक परमचतुरे

नाशिताघचरिते भुवनत्रय-
नयिके वितर मे शुभमनुपमम् ॥ २ ॥

शारदेन्दुरुचिमञ्जुळतमवदने

मुनिहृदयनिवासिनि

चारुकुन्दमुकुळोपवर रदने

पारिजाततरुपल्लव चरणे
पद्मनाभसहजे हर मे शुचम् ॥ ३ ॥

◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇ ◇